ज्ञान दृष्टि

भारतीय सेना

Gyan Drishti

जनवरी 2025 अंक 4 द्वितीय संस्करण

संपादक – शशिधर उज्ज्वल मोबाइल न0– 7004859938 email : ujjawal.shashidhar007@gmail.com

"THE SAFETY, HONOUR AND WELFARE OF YOUR COUNTRY COME FIRST, ALWAYS AND EVERYTIME.

THE HONOUR, WELFARE AND COMFORT OF THE MEN YOU COMMAND COME NEXT.

YOUR OWN EASE, COMFORT AND SAFETY COME LAST, ALWAYS AND EVERY TIME."

प्रिय पाठकों,

भारत की आन-बान और शान को बनाए रखने के लिए भारतीय सेना मुस्तैदी के साथ सीमा पर डँटी रहती है। पुरी दुनिया में भारतीय सेना की जांबाजी और बहादुरी की चर्चा की जाती है। पर्वत, पहाड़, मरूस्थल, बर्फ, जंगल, जल, थल, नभ की कठोर ट्रेनिंग में तपने के बाद उन्हें एक योद्धा के रूप में तैयार किया जाता है। दुश्मनों पर शेर की भांति टूट पड़ने वाली सेना की वीरता के कई कारनामें आपने पढ़ा और सुना होगा। अनुशासन में रहते हुए हमारे वीर जवानों के हौसले चट्टान की तरह मजबूत होते हैं और इरादे पर्वत की तरह ऊँचे। युद्ध ही नहीं किसी संकट काल जैसे- बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, बर्फबारी आदि में भी सेना हमारी सहायता करता है। देश ही नहीं दुनिया में शांति स्थापित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र के झंडे तले भी भारतीय सेना जाती है। कांगो, सुडान, लेबनान जैसे देशों में भारतीय शांति सेना की भूमिका की विश्व भर में सराहना की जाती है।

सेना के वीर जवान सीमा पर रहकर दुश्मनों से लोहा लेकर हमें भय से दूर रखते है। इन्हीं के बदौलत हम और आप चैन की नींद सो पाते है। भारत की सेना अपने देश की मिट्टी के लिए कुर्बान होने से भी नहीं कतराते हैं। चाहे देश की रक्षा की बात हो या देश में संकट की स्थिति हो, हर विपत्ति में भारतीय सेना हमारा साथ देती है। आपदा की स्थिति में भी सेना लोगों के लिए संकटमोचन बन जाती है। सेना के पहुँचने भर से लोगों में संकट से निबटने की हिम्मत आ जाती है। चुनौतीपूर्ण रेस्क्यू ऑपरेशन सेना के बिना असंभव सा होता है। कभी-कभी पर्वतारोही या रोमांचक खेलों के शौकीन मुसीबत में फँस जाते हैं तो वायु सेना या थल सेना की मदद से ही उन्हें मुसीबत से निकाला जाता है। नक्सलियों से लड़ने वाली पुलिस और अर्द्धसैन्य बलों को भी सेना के रिटायर्ड अफसर ही ट्रेनिंग देते हैं। कभी-कभी तो स्थानीय प्रशासन के कमजोर पड़ने पर सेना को ही शांति व्यवस्था बनाने के लिये बुलाना पड़ता है। भारतीय सेना के इस जोश, जज़्बे, हिम्मत, ताकत और बलिदान को हम भारतीय सलाम करते है। ठंडे के दिनों में जब हम घरों से बाहर निकलने से कतराते हैं, उस समस भारतीय सेना सियाचिन में बर्फ के पहाड़ों के बीच अविचल, अडिग रहकर हमारे देश की पहरा कर रहे होते है। गर्मियों में जब हम तेज तापमान से बचने के लिए ए.सी., कुलर जैसे विकल्पों का तलाश कर रहे होते हैं उस वक्त भारतीय सेना मरूस्थल में गर्म हवा के थपेड़े खाकर भारतीय सीमा की रक्षा कर रहे होते हैं।

आप में से भी कई लोग भारतीय सेना में देशसेवा के लिए जाना चाहते होंगे। हम आपके जोश और जज़्बे को बढ़ाने के लिए भारतीय सेना से आपका परिचय करवाते हैं। आइए! इस अंक में हम भारतीय सेना के पराक्रम और शौर्य की चर्चा करेंगें। ज्ञान दृष्टि का यह अंक भारतीय सेना को समर्पित है।

जय हिन्द!!!

शशिधर उज्ज्वल
सदस्यः 'टीचर्स ऑफ बिहार'
संकलन एवं संपादन
7004859938

भारतीय सेना

भारतीय सेना की स्थापना 1895 में हुई थी लेकिन इसे वर्तमान संरचना आजादी के बाद प्राप्त हुई। 1947 में देश के विभाजन होने पर भारत को 45 रेजीमेंट मिलीं जिनमें 2.5 लाख सैनिक थे। स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात् भारत सरकार ने सेना के ढाँचें में कतिपय परिवर्तन किये। भारतीय रियासतों की सेना को भी देश की सैन्य व्यवस्था में शामिल कर लिया गया।

भारतीय सेना के तीन अंग हैं– थल सेना, नौ सेना और वायु सेना। सेना के सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति होते हैं और उनके अधीन तीनों सेना के प्रमुख होते हैं। तीनों सेना के लिए एक रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) होते हैं। तीनों सेना का वरिष्ठता क्रम भी है। थल सेना पहले नंबर पर, नौ सेना दूसरे नंबर पर और वायु सेना तीसरे नंबर पर आती है। भारतीय नागरिक स्वेच्छा से सेना में शामिल होते हैं।

भारतीय थल सेना

भारतीय थल सेना को रक्षा पंक्ति में प्रथम तथा प्रधान स्थान प्राप्त है। भारतीय थल सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। थल सेना के सेनाध्यक्ष चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ होते हैं, जो समग्र रूप से सेना की कमान, नियंत्रण और प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। सेना को छः कमांडों और एक प्रशिक्षण कमांड में बाँटा गया है–

1. **पूर्वी कमानः** मुख्यालय–कोलकाता
2. **मध्य कमानः** मुख्यालय–लखनऊ
3. **उत्तरी कमानः** मुख्यालय–ऊधमपुर
4. **दक्षिणी कमानः** मुख्यालय–पुणे
5. **दक्षिणी–पश्चिमी कमानः** मुख्यालय–जयपुर
6. **पश्चिमी कमानः** मुख्यालय–चण्डीगढ़
7. **ट्रेनिंग कमानः** मुख्यालय–शिमला

थल सेना का संगठन

1. **सेक्शनः** सेना की सबसे छोटी इकाई को सेक्शन कहते हैं। इसमें 10–12 सैनिक होते हैं। इसकी कमांडिंग सेक्शन कमांडर (हवलदार) करते हैं।
2. **प्लाटून/पलटन–** इसमें 4 सेक्शन शामिल होते हैं। इसके प्रमुख प्लाटून कमांडर होते हैं।
3. **कंपनी–** इसमें 4 प्लाटून शामिल होते हैं। इसके प्रमुख को कंपनी कमांडर/मेजर कहते हैं।
4. **बटालियन/रेजीमेंट–** यह चार कंपनी को मिलाकर बनाया जाता है। इसके कमांडिंग ऑफिसर कर्नल रैंक का अधिकारी होता है।
5. **ब्रिगेड–** यह तीन बटालियन को मिलाकर बनाया जाता है। इसके प्रमुख को ब्रिगेडियर कहते हैं।
6. **डिविजन–** एक डिविजन में 3–4 ब्रिगेड होते हैं। इसके प्रमुख मेजर जनरल रैंक के अधिकारी होते हैं।
7. **कोर–** एक सेना कोर में 3–4 डिविजन शामिल होते हैं। इसके प्रमुख को लेफ्टिनेंट जनरल कहते हैं।

भारतीय सेना को दो भागों में विभाजित किया जाता है– सशस्त्र दल और सेवा दल

सशस्त्र दलः

सशस्त्र दल में उन सैनिकों को शामिल किया जाता है जो किसी अभियान या ऑपरेशन में शामिल होते हैं। सशस्त्र दल में निम्नलिखित विभाग शामिल होते हैं–

क. बख्तरबंद दल
ख. इन्फेंट्री (पैदल सेना)
ग. मशीनगन इन्फेंट्री

सहायक सशस्त्र दल में निम्नलिखित विभाग शामिल होते हैं–

क. तोपखाना
ख. इंजीनियर्स
ग. वायु रक्षा सेना
घ. विमानन सेना दल
ड़. सिग्नल देने वाला दल

सेवा दलः

सशस्त्र दल के अलावा शेष सेना को सेवा दल के अंतर्गत रखा जाता है। इनका मुख्य कार्य सेना को रसद (खाद्य सामग्री) उपलब्ध करवाना और सेना में प्रशासनिक तंत्र को चलाना है। सेवा दल में निम्नलिखित विभाग शामिल होते है–

क. सेना सेवा कोर
ख. सेना चिकित्सा कोर
ग. सेना आयुध कोर
घ. इलेक्ट्रॉनिक्स और मैकेनिकल इंजीनियर्स
ड़. रीमाउंट वेटनरी कोर
च. गुप्तचर कोर

प्रादेशिक सेना (Territorial army)

प्रादेशिक सेना भारतीय सेना की ही एक इकाई है। इसमें सामान्य श्रमिक से लेकर सिविल सर्वेन्ट तक भारत के सभी 18 से 42 वर्ष तक के नागरिक, जो शारीरिक रूप से सक्षम हों, इसमें भर्ती हो सकते हैं। यह हमारी रक्षा पंक्ति की सेकेण्ड लाइन है। युद्ध के समय फ्रंट लाइन में तैनाती के लिए भी इसका उपयोग होता है। टेरिटोरियल आर्मी के स्वंयसेवकों को प्रति वर्ष कुछ दिनों का सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि जरूरत पड़ने पर दे'ा की रक्षा के लिए उनकी सेवाएं ली जा सकें। भारतीय क्रिकेटर एवं पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी भी प्रादेशिक सेना के ही एक सदस्य हैं।

घुड़सवार सेना

भारतीय थलसेना की विभिन्न रेजिमेंटों में 61वीं कैवलरी की अनोखी विशिष्टता है कि यह विश्व में एकमात्र अयांत्रिक घुड़सवार सेना है। इसकी स्थापना जनवरी 1954 में किया गया। इस रेजिमेंट को पोलो खेल परंपरा की विशिष्टता भी हासिल है। इसने भारत को कई मशहूर पोलो खिलाड़ी भी दिए हैं।

ऊँट दस्ता

भारतीय सेना के पास एक ऊँट दस्ता भी है। यह दस्ता सीमा सुरक्षा बल के अधीन है और मरूस्थलीय क्षेत्रों में पेट्रोलिंग के लिए इस दस्ते का उपयोग किया जाता है।

सेना के रेजिमेंट

रेजिमेंट शब्द लैटिन भाषा के 'रेजिमेन' से बना है, जिसका अर्थ है एक नियम अथवा आदेश की प्रणाली। एक रेजिमेंट की अपनी अलग पहचान, चिह्न, विशिष्ट यूनिफार्म तथा तमगे और युद्ध में प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर होती है। भारतीय सेना की रेजिमेंट प्रणाली ब्रिटिश की देन है। मौजूदा समय में भारत में जाति एवं क्षेत्र के आधार पर अनेक रेजिमेंट हैं। जैसे– सिख, जाट, गोरखा, राजपूत, डोगरा, नागा, मद्रास, बिहार, पंजाब, असम आदि। रेजिमेंट का मुखिया एक कर्नल होता है, जो लेफ्टिनेंट जनरल जैसे विशिष्ट उच्च पद का अधिकारी होता है। आइए अब हम कुछ महत्त्वपूर्ण रेजिमेंट के बारे में जानते हैं–

मद्रास रेजिमेंट

स्थापना: 1758

आदर्श वाक्य: 'स्वधर्मे निधानम श्रेयः'

युद्धघोष: ''वीर मद्रासी, अडि कोल्लू, अडि कोल्लू''

मुख्यालय: वेलिंग्टन (ऊटी), तमिलनाडु

प्रमुख तथ्य: मद्रास रेजीमेंट भारतीय सेना की सबसे पुरानी इंफेंट्री रेजीमेंटों में से एक है। इस रेजीमेंट के अधिकांश सैनिकों का संबंध तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक एवं आंध्रप्रदेश जैसे दक्षिण भारतीय राज्यों से होता है एवं कन्नड़, तमिल, तेलगू एवं मलयालम भाषियों को वरीयता दी जाती है। लेकिन रेजिमेंट के अधिकारी के रूप में किसी राज्य के निवासी की नियुक्ति हो सकती है।

गोरखा रेजिमेंट

स्थापना: 1815

आदर्श वाक्य: ''कायर हुनु भन्दा मर्नु राम्रो'', ''शौर्य एवं निष्ठा'' तथा **''यत्राहम् विजयस्तत्रः''**

युद्धघोष: ''जय महाकाली, आयो गोरखाली''

मुख्यालय: इस रेजिमेंट के विभिन्न भागों का अलग–अलग मुख्यालय है।

प्रमुख तथ्य: वर्तमान समय में इस रेजिमेंट के 11 भाग हैं जिन्हें क्रमशः 1 गोरखा रेजिमेंट, 2 गोरखा रेजिमेंट आदि नामों से जाना जाता है। गोरखा रेजिमेंट में मूल रूप से नेपाली मूल के गोरखा लोगों को शामिल किया जाता है।

मराठा लाइट इंफेंट्री

स्थापना: 1768

आदर्श वाक्य: ''ड्यूटी, ऑनर, करेज''

युद्धघोष: ''बोल छत्रपति शिवाजी महाराज की जय, तेमलाइ माता की जय''

मुख्यालय: बेलगाम, कर्नाटक

प्रमुख तथ्य: इस रेजिमेंट में मूल रूप से महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के कुर्ग क्षेत्र के मराठी भाषी लोगों की भर्ती की जाती है, अतः इस रेजिमेंट के सैनिकों को 'गणपत' भी कहा जाता है, क्योंकि ये लोग भगवान गणेश की पूजा धूमधाम से करते हैं।

राजपूत रेजिमेंट

स्थापना: 1778

आदर्श वाक्य: **''सर्वत्र विजय''**

युद्धघोष: ''बोल बजरंग बली की जय''

मुख्यालय: फतेहगढ़, उत्तरप्रदेश

प्रमुख तथ्य: राजपूत रेजिमेंट ने दोनों विश्वयुद्धों में अंग्रेजों के लिए जौहर दिखाया। आजादी के तुरंत बाद भारत–पाक युद्ध में पाकिस्तान से लोहा लिया। भारत–चीन युद्ध में भी राजपूत रेजिमेंट ने अदम्य साहस का परिचय दिया। 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्ध के बाद पाकिस्तानी सेना राजपूत रेजिमेंट के नाम से भय खाते थे। कारगिल युद्ध के समय राजपूत रेजिमेंट ने भी कई महत्त्वपूर्ण प्वाइंट पर कब्जा किया।

राजपूताना राइफल्स

स्थापना: 1775

आदर्श वाक्य: **''वीर भाग्य वसुन्धरा''**

युद्धघोष: ''राजा रामचन्द्र की जय''

मुख्यालय: दिल्ली कैंट

प्रमुख तथ्य: इस रेजिमेंट में सैलिक के रूप में मूल रूप से राजस्थान और मध्यप्रदेश के राजपूतों की भर्ती की जाती है। राजपूताना राइफल्स स्वतंत्रता प्राप्ति से अबतक पाकिस्तान के विरूद्ध अनेक लड़ाईयों में हिस्सा ले चुकी है।

पंजाब रेजिमेंट

स्थापना: 1761

आदर्श वाक्य: **''स्थल वा जल''**

युद्धघोष: ''जो बोले से निहाल, सत श्री अकाल''

मुख्यालय: रामगढ़ कैंट, झारखण्ड

प्रमुख तथ्य: भारत–पाक बँटवारे के समय पंजाब रेजिमेंट का भी बँटवारा हुआ था। पंजाब रेजिमेंट ने ही लोंगेवाला में पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध किया था और 2000 पाकिस्तानी सैनिकों और 40 टैंकों के सामने मात्र 120 पंजाब रेजिमेंट के जवानों ने पाकिस्तानी सेना को धूल चटा दी थी। हालांकि ऑपरेशन 'ब्लू स्टार' के समय बगावत की वजह से 122 अधिकारियों के कोर्टमार्शल होने जैसी बड़ी घटना भी घटी।

डोगरा रेजिमेंट

स्थापना: 1877

आदर्श वाक्य: **''कर्तव्यं अन्वात्मा''**

युद्धघोष: ''ज्वाला माता की जय''

मुख्यालय: फैजाबाद, उत्तरप्रदेश

प्रमुख तथ्य: यह रेजिमेंट जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों के डोगरा लोगों की भर्ती करती है। डोगरा रेजिमेंट ने कई बार पाकिस्तान के दाँत खट्टे किये हैं। डोगरा रेजिमेंट को देश की सबसे खतरनाक रेजिमेंट में गिना जाता है।

सिख रेजिमेंट

स्थापनाः 1846

आदर्श वाक्यः **''निश्चय कर अपनी जीत करूँ''**

युद्धघोषः ''जो बोले से निहाल, सत श्री अकाल''

मुख्यालयः रामगढ़ कैंट, झारखण्ड

प्रमुख तथ्यः सिख रेजिमेंट अपने अधिकांश सिपाही एवं अधिकारी सिख समुदाय से भर्ती करती है।

जाट रेजिमेंट

स्थापनाः 1795

आदर्श वाक्यः **''संगठन व वीरता''**

युद्धघोषः ''जाट बलवान जय भगवान''

मुख्यालयः बरेली, उत्तरप्रदेश

प्रमुख तथ्यः इस रेजिमेंट में मुख्यतः पश्चिमी उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली के हिन्दु जाटों की भर्ती की जाती है। जाट रेजिमेंट भारत की पुरानी तथा सबसे अधिक पदक प्राप्त करने वाली रेजिमेंट में से एक है। सन् 1839 से 1947 के बीच यह रेजिमेंट 41 युद्ध सम्मान प्राप्त कर चुकी है।

कुमाऊँ रेजिमेंट

स्थापनाः 1813

आदर्श वाक्यः **''पराक्रमो विजयते''**

युद्धघोषः ''कालिका माता की जय, बजरंग बाली की जय, दादा किशन की जय एवं जय जय दुर्गे''

मुख्यालयः रानीखेत, उत्तराखंड

प्रमुख तथ्यः कुमाऊँ रेजिमेंट ही दुनिया के सबसे ऊँचे युद्ध के मैदान सियाचिन ग्लेशियर में तैनात हैं। कुमाऊँ रेजिमेंट ने तमाम युद्धों में अपना जौहर दिखाया है।

असम रेजिमेंट

स्थापनाः 1941

आदर्श वाक्यः **''असम विक्रम''**

युद्धघोषः ''राइनो चार्ज''

मुख्यालयः हैप्पी वैली, शिलांग (मेघालय)

प्रमुख तथ्यः इस रेजिमेंट में मुख्य रूप से उत्तर–पूर्वी भारत के सात राज्यों के लोगों की भर्ती की जाती है।

नागा रेजिमेंट

स्थापनाः 1970

युद्धघोषः ''जय दुर्गा नागा''

मुख्यालयः रानीखेत, उत्तराखण्ड

आकारः 3 बटालियन

प्रमुख तथ्यः नागा रेजिमेंट भारत की सबसे युवा रेजिमेंट है। इस रेजिमेंट में मुख्य रूप से

नागालैंड के लोगों की भर्ती की जाती है। नागा रेजिमेंट ने अपनी स्थापना के तुरंत बाद बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में हिस्सा लिया था। कारगिल युद्ध में भी नागा रेजिमेंट ने द्रास सेक्टर में कप्तान संभाली थी।

महार रेजिमेंट

स्थापनाः 1941

आदर्श वाक्यः **''यश सिद्धि''**

युद्धघोषः ''बोलो हिंदुस्तान की जय''

मुख्यालयः सौगौड़, मध्यप्रदेश

प्रमुख तथ्यः महार रेजिमेंट में मुख्यतः महाराष्ट्र के महार जाति के लोगों की भर्ती की जाती है।

बिहार रेजिमेंट

स्थापनाः 1941

आदर्श वाक्यः **''करम ही धरम''**

युद्धघोषः ''जय बजरंगबली''

मुख्यालयः दानापुर, बिहार

प्रमुख तथ्यः यह रेजिमेंट भारत की दूसरी सबसे पुरानी रेजिमेंट है। इसने अंग्रेजों के खिलाफ 1857 की विद्रोह में भी भाग लिया था। इस रेजिमेंट में मुख्यतः बिहार, झारखण्ड, ओड़िसा, गुजरात और महाराष्ट्र के लोगों की भर्ती की जाती है। बिहार रेजिमेंट ने आजादी से पहले बर्मा युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध में हिस्सा लिया था। वहीं आजादी के बाद इस रेजिमेंट ने भारत–पाक के सभी युद्धों में हिस्सा लिया। ऊरी की घटना हो या भारत–चीन का ताजा विवाद, बिहार रेजिमेंट ने अपने शौर्य का हमेशा परिचय दिया है।

बिहार रेजिमेंट ने दिया था देश को राष्ट्रीय अशोक चिह्न

सेना के पुराने दस्तावेजों से पता चलता है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद बिहार रेजिमेंट की तीन बटालियन की एक यूनिट के कैप्टन हबीबुल्ला खान खटक ने सम्राट अशोक निर्मित चार शेर वाली स्तंभ को देखा। खटक को लगा कि यह मूर्ति बिहार रेजिमेंट का सही निशान बन सकती है। उन्होंने मूर्ति वाले कुछ पोस्टकार्ड खरीदे और उच्च अधिकारियों के समक्ष अपना प्रस्ताव रखने का विचार किया। उसी दरम्यान यूनिट का अंग्रेज कमांडिंग ऑफिसर छुट्टी पर चला गया। कैप्टन खटक उनके स्थान पर सीओ का काम देख रहे थे। उन्होंने सेना मुख्यालय को पत्र लिखकर सुझाव रखा कि नव गठित बिहार रेजिमेंट के लिए यह चिह्न अपनाया जाए। कुछ समय के बाद उनके प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी।

वर्मा युद्ध से लौटी बिहार बटालियन को जब आराम के लिए शिलांग भेजा गया, तो बिहार के राज्यपाल सर टॉमस रदरफोर्ड एक बार शिलांग में बिहार रेजिमेंट के जवानों से मिलने गए। उन्होंने जवानों के कैप पर यह लाजवाब निशान देखा। निशान उन्हें बहुत पसंद आया उन्होंने तब कर्नल बन चुके हबीबुल्ला से अनुरोध किया कि वह इस निशान को बिहार का राजकीय चिह्न बनाना चाहते हैं। हबीबुल्ला ने खुशी–खुशी मंजूरी प्रदान कर दी। उस समय बिहार का राजकीय चिह्न एक पात्र में तैर रही मछली हुआ करती थी। मई 1945ई. में एक गज़ट नोटिफिकेशन के जरिए शेरों की इस मूर्ति को बिहार का राजकीय निशान बना दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने भी इसे राष्ट्रीय प्रतीक बनाने का फैसला किया। 26 जनवरी 1950 को अशोक चिह्न को राष्ट्रीय निशान घोषित कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि कर्नल हबीबुल्ला खटक भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गये और वहाँ सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद से रिटायर हुए। अशोक चिह्न उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास सारनाथ में मिला था। इसका निर्माण ईसा पूर्व 250 में हुआ था।

साभार– नंदन जनवरी 2011

भारतीय नौ सेना

भारतीय जल क्षेत्र में पुर्तगालियों के आगमन के बाद ही नौ–सेना विकसित हुई। आधुनिक भारतीय नौ सेना की नींव 17वीं शताब्दी में रखी गई थी, जब ईस्ट इंडिया कम्पनी ने एक समुद्री सेना के रूप में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की और फिर बाद में 1934 में रॉयल इंडियन नेवी की स्थापना हुई। भारतीय नौ सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। यह मुख्य नौ सेना अधिकारी– एक एडमिरल के नियंत्रण में होता है। भारतीय नौ सेना तीन क्षेत्रों के कमांडों के तहत तैनात की गई है। जिसमें प्रत्येक का नियंत्रण एक फ्लैग अधिकारी द्वारा किया जाता है।

1. **पश्चिमी नौ सेना कमांडः** मुख्यालय– अरब सागर के तट पर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
2. **दक्षिणी नौ सेना कमांडः** मुख्यालय– अरब सागर के तट पर, केरल के कोच्चि (कोचीन)
3. **पूर्वी नौ सेना कमांडः** मुख्यालय– बंगाल की खाड़ी में, विशाखापट्टनम (आंध्र प्रदेश)

भारतीय वायु सेना

वायुसेना का प्रथम गठन प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान और 1913ई. में उत्तर प्रदेश में एक सैनिक उड्डयन स्कूल की स्थापना के साथ हुआ। भारतीय वायुसेना की औपचारिक स्थापना 8 अक्टूबर 1932ई. को की गई। 1 अप्रैल 1954ई. को एयर मार्शल सुब्रोतो मुखर्जी ने प्रथम भारतीय वायु सेना प्रमुख का कार्यभार संभाला था। भारतीय वायुसेना को आधुनिक उपकरणों से लैस किया गया है जिसमें लड़ाकु विमान से लेकर सुपरसोनिक जहाज, मिसाइल वाहक, हेलीकॉप्टर आदि सभी शामिल है। 20 वीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारतीय वायुसेना में महिलाओं को भी शामिल करने की पहल की गई है। भारतीय वायुसेना के सात कमांड हैं–

1. वायु सेना कमांडः मुख्यालय– नई दिल्ली
2. पूर्वी वायु सेना कमांडः मुख्यालय– शिलांग
3. मध्य वायु सेना कमांडः मुख्यालय– इलाहाबाद
4. दक्षिणी–पश्चिमी वायु सेना कमांडः मुख्यालय– गांधीनगर, गुजरात
5. दक्षिणी वायु सेना कमांडः मुख्यालय– तिरूवनंतपुरम
6. प्रशिक्षण कमांडः मुख्यालय– बेंगलूरू
7. रखरखाव कमांडः मुख्यालय– नागपुर

सेना प्रमुख

राष्ट्रपति

भारतीय सेना के तीन अंग हैं– थल सेना, नौ सेना और वायु सेना। भारतीय सेना के सुप्रीम कमांडर भारत के राष्ट्रपति होते हैं और उनके अधीन तीनों सेना के प्रमुख होते हैं। लेकिन वह अपनी शक्ति का उपयोग विधि के अनुसार ही कर सकते हैं। राष्ट्रपति अनुच्छेद 352 के तहत युद्ध या बाह्य आक्रमण या आंतरिक सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में आपातकाल लागू कर सकता है।

भारत के राष्ट्रपतिः माननीय द्रौपदी मुर्मू

चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस)

तीनों सेना के लिए एक रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) होते हैं। ये भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन वरिष्ठतम वर्दीधारी सैन्य सलाहकार हैं। इस तरह के पद का विचार सर्वप्रथम लार्ड माउंटबेटन द्वारा लाया गया था। कारगिल युद्ध के बाद इस पद को औपचारिक रूप से इसके गठन पर जोर दिया गया। 24 दिसम्बर 2019 को भारत की सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने इस पद के सृजन की घोषणा की। ये एक चार सितारा रैंक प्राप्त अधिकारी पद होते हैं। इसकी नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति के द्वारा किया जाता है। इनकी अवधि काल तीन वर्ष या 65 वर्ष की आयु तक (जो भी पहले हो) होता है। इस पद का गठन 1 जनवरी, 2020 को किया गया था।

भारत के प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) **जनरल विपिन रावत** थे। 8 दिसम्बर 2021 को एक हैलीकॉप्टर क्रैश जनरल विपिन रावत का निधन हो गया। इसके बाद 9 दिसम्बर 2021 से 29 सितम्बर 2022 तक यह पद रिक्त रहा।

भारत के वर्तमान चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) **जनरल अनिल चौहान** हैं। जनरल अनिल चौहान को 30 सितम्बर 2022 से भारत रक्षा प्रमुख (सीडीएस) बनाया गया है। जनरल अनिल चौहान परम विशिष्ट सेवा पदक (PVSM), उत्तम युद्ध सेवा पदक (UYSM), अति विशिष्ट सेवा पदक (AVSM), सेना पदक (SM), विशिष्ट सेवा पदक (VSM) से सम्मानित हैं।

थल सेनाध्यक्ष

वर्तमान में भारतीय थलसेना के प्रमुख **जनरल उपेन्द्र द्विवेदी** हैं। 30 जून, 2024 को इन्हें भारत के 30वें थलसेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। जनरल उपेन्द्र द्विवेदी परम विशिष्ट सेवा पदक (PVSM), अति विशिष्ट सेवा पदक (AVSM) से सम्मानित हैं।

इस पद की स्थापना 1955 में भारतीय संसद द्वारा पारित द कमांडर इन चीफ, आर्मी (चेंज इन डेसिगनेशन) एक्ट के अंतर्गत हुई। इससे पूर्व इस पद का नाम कमांडर इन चीफ, आर्मी हुआ करता था। इस पद पर नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

नौ सेनाध्यक्ष

भारतीय नौसेना के वर्तमान नौ सेना प्रमुख **एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी** हैं। इन्होंने 30 अप्रैल 2024 को भारत के नौ सेनाध्यक्ष का पदभार संभाला। ये जून 1980 से भारतीय नौ सेना में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। एडमिरल करमबीर सिंह परम विशिष्ट सेवा पदक (PVSM) और अति विशिष्ट सेवा पदक (AVSM) से सम्मानित हैं। इस पद का गठन 26 जनवरी, 1950 को किया गया था।

वायु सेनाध्यक्ष

भारतीय वायुसेना के वर्तमान सेनाध्यक्ष **एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह** हैं। वे परम विशिष्ट सेवा पदक (PVSM), अति विशिष्ट सेवा पदक (AVSM) से सम्मानित हैं। वायुसेना के 28वें वायुसेनाध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने से पूर्व ये सह–वायुसेनाध्यक्ष केपद पर कार्यरत थे। ये एक अर्हताप्राप्त उड़ान अनुदेशक एवं एक्सपेरिमेंटल टेस्ट पायलट हैं, जिन्हें विभिन्न प्रकार के फिक्स्ड विंग तथा रोटरी विंग वायुयानों पर 5000 घंटों से भी अधिक सैन्य उड़ान का अनुभव है। ये राष्ट्रीय उड़ान परीक्षण केंद्र में तेजस वायुयान की उड़ान परीक्षण के प्रोजेक्ट डायरेक्टर भी रहे हैं।

सेना में रैंक

थल सेना	नौ सेना	वायु सेना
फील्ड मार्शल– Field Marshal	एडमिरल ऑफ फ्लीट	मार्शल ऑफ दी एयर
जनरल– General	एडमिरल	एयर चीफ मार्शल
लेफ्टिनेंट जनरल– Lieutenant General	वाइस एडमिरल	एयर मार्शल
मेजर जनरल– Major General	रियर एडमिरल	एयर वाइस मार्शल
ब्रिगेडियर– Brigadier	कोमोडोर	एयर कोमोडोर
कर्नल– Colonel	कैप्टन	ग्रुप कैप्टन
लेफ्टिनेंट कर्नल– Lieutenant Colonel	कमांडर	विंग कमांडर
मेजर– Major	लेफ्टिनेंट कमांडर	स्क्वाड्रन लीडर
कैप्टन– Captain	लेफ्टिनेंट	फ्लाइट लेफ्टिनेंट
लेफ्टिनेंट– Lieutenant	सब–लेफ्टिनेंट	फ्लाइंग ऑफिसर
सुबेदार मेजर– Subedar Major	चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस): जनरल अनिल चौहान	भारतीय थलसेना के प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी	भारतीय नौसैना प्रमुखः एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी	भारतीय वायुसेना के सेनाध्यक्षः एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह
सुबेदार– Subedar				
नायब सुबेदार– Nayab Subedar				
हवलदार– Sergeant				
नायक– Naik				
लांसनायक– Lance Hero				
सिपाही - Sepoy				

सेना में सैल्यूट

सेना में सलामी का बड़ा महत्व है। सेना में सलामी किसी व्यक्ति को नहीं बल्कि सेना की वर्दी और पद के सम्मान में दी जाती है। साफ प्रेस की हुई युनिफार्म, चमचमाते जूते, सिर पर शान से तनी टोपी, हाथ तुरंत माथे पर सैल्यूट के लिए पहुँचता है और जुबां से एकाएक निकलता है– 'जय हिंद'। आपने देखा होगा कि जब कोई सैनिक अपने से किसी वरिष्ठ को सैल्यूट करता है, तो दाएं हाथ की खुली हथेली सीधी रखते हुए उसे सलाम करता है। इसका संकेत यह है कि उसके हाथ में कोई हथियार नहीं छिपा हुआ है और उसके इरादे नेक हैं। यह परम्परा पराजित सैनिकों के द्वारा विजेता सैनिक के सम्मान में शुरू हुई थी। पहले जहाँ थल सेना और वायुसेना के सैनिक हथेली सामने की ओर खोलकर सलामी देते थे। वहीं नौ सैनिकों की हथेली थोड़ी नीचे की ओर मुड़ी रहती थी और इसका कारण यह था कि जहाज पर तेल और गंदगी के कारण नौ सैनिकों के हाथ मैले होते थे। लिहाजा वे अपने अफसरों को पूरी हथेली नहीं दिखाते थे।

सैल्यूट करने का भी एक नियम होता है। यदि कोई जूनियर अधिकारी अपने सीनियर अधिकारी को सैल्यूट करता है, तो सीनियर अधिकारियों में भी जो सबसे वरिष्ठ होगा वही सैल्यूट का जवाब देगा। यदि मौजूद तीनों सेनाओं के कई अधिकारी एक ही रैंक के हो तो सेना में वरिष्ठता क्रम के मुताबिक अधिकारी सैल्यट का जवाब देगा।

साभार– नंदन जनवरी 2011

भारतीय सेना के रिकार्ड्स

सर्वाधिक ऊँचाई पर टैंक– भारत की आजादी के बाद पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जा करने के लिए हमला बोल दिया। उसके जवाब में भारतीय सेना 11 हजार 200 फीट ऊँची जोजीला दर्रा पर स्टुअर्ट टैंक को चढ़ा दिया। इतिहास में उस ऊँचाई पर पहले कभी टैंको का इस्तेमाल नहीं किया गया था। 14 वर्षों के बाद चीन के साथ 1962 की लड़ाई में लद्दाख सेक्टर की चुशुल रणभूमि में 14 हजार 320 फीट की ऊँचाई पर टैंकों का इस्तेमाल किया गया।

शैतान सिंह के कारनामें– 1962 के भारत–चीन युद्ध में बहादुरी के लिए 13 कुमाऊं बटालियन की सी कंपनी के मेजर शैतान सिंह भाटी ने बहादुरी का ऐसा कारनामा दिखाया कि चीनी हक्के–बक्के रह गये। उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

लोंगेवाला की लड़ाई– पाकिस्तान के साथ 1971 में फिर हुई लड़ाई में राजस्थान के लोंगेवाला सेक्टर में दुश्मन के टैंक घुस आये थे। उनका मुकाबला मुट्ठी भर भारतीय सैनिकों ने रात भर किया था। सुबह होते ही जैसलमेर से वायुसेना के हंटर विमानों ने आकर पाकिस्तानी हमलावरों को खदेड़ा। इसी लड़ाई पर 'बार्डर' फिल्म भी बनायी गई है।

कराची पर बमबारी– नौसेना के मिसाइल पोतों ने कराची पर ऐसी बमबारी की थी कि पाकिस्तान के कई जंगी जहाज डूब गए और कराची बंदरगाह के तेल टैंकरों में ऐसी आग लगी कि सात दिन तक धुंए के कारण कराची में अंधेरा छाया रहा। नौसेना ने इसी लड़ाई में पाकिस्तानी पनडुब्बी गाज़ी को भी डुबाया था। भारत का भी एक जहाज खुकरी को पाकिस्तानी डुबाने में कामयाब रहे, लेकिन इस जहाज के कैप्टन महेंद्रनाथ मुल्ला ने जिस बहादुरी के साथ जहाज समेत जल समाधि ली, उसकी मिसाल दुनिया भर की नौसेनाएं देती है। इसी घटना पर वर्ष 2017 में 'गाज़ी' फिल्म बनायी गयी है।

बाना पोस्ट– सियाचिन दुनिया का सबसे ठंडा युद्ध क्षेत्र है करीब 22 हजार फीट ऊँचे इस लड़ाई के मैदान पर पाकिस्तानी सेना को खदेड़ भारतीय सेना ने 1984 में कब्जा किया था। जम्मू–कश्मीर लाइट इंफेंट्री के नायाब सूबेदार बाना सिंह ने पाकिस्तानी शिविर पर कब्जा किया। बाद में इस स्थान को बाना पोस्ट कहा जाने लगा। बाना सिंह को परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

पैटन टैंको का कब्रिस्तान– 1965 के युद्ध में पंजाब के खेमकरण सेक्टर में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान के पैटन टैंकों को जमकर तबाह किया। यहाँ हुई लड़ाई में अमेरिका में बने एम–48 पैटन टैंकों की इतनी तबाही हुई कि इस स्थान को 'पैटन टैंको का कब्रिस्तान' कहा जाने लगा। इस लड़ाई में पाकिस्तान के 165 से ज्यादा टैंक एक ही स्थान पर नष्ट हुए।

वीर शहीद अब्दुल हमीद– कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद मसौदी भारतीय सेना के 4 ग्रेनेडियर में एक सिपाही थे। हमीद 1965 के भारत–पाक युद्ध में वीरता का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उन्हे मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। 8 सितम्बर 1965 की रात में पाकिस्तान ने अमेरिकी टैंक 'पैटन' के खेमे के साथ पंजाब के तरनतारन जिले के खेमकरण सेक्टर में 'असल उत्ताड़' गाँव पर हमला बोल दिया। भारतीय सैनिकों के पास न तो टैंक थे और न ही बड़े हथियार। हवलदार अब्दुल हमीद के पास 'गन माउंटेड जीप' थी, जो पैटन टैंको के सामने खिलौने के समान थी। फिर भी शहीद होने से पहले अब्दुल हमीद ने 'गन माउन्टेड जीप' से पाकिस्तान के सात पैटन टैंकों को तबाह और नष्ट कर दिया।

वीरता पदक

सेना में अदम्य साहस और वीरता के लिये कई तरह के अलंकरण प्रदान किये जाते हैं। परमवीर चक्र सेना का सबसे बड़ा पुरस्कार है जिसे युद्ध के समय अद्वितीय बहादुरी के लिये दिया जाता है। ये वीरता अलंकरण मरणोपरांत भी दिये जा सकते हैं। ये अलंकरण सेना के सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किये जाते हैं। दोबारा बहादुरी दिखाने पर एक बार प्रदान किया जाता है जो पूर्व के उसी सम्मान की पट्टी पर ही लगाया जाता है।

परमवीर चक्र (PVC)– युद्ध के दौरान जल, थल या नभ में दुश्मन के सामने अद्भुत शौर्य की पराकाष्ठा के लिये किसी वीर सैनिक को परमवीर चक्र दिया जाता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि भारत के आजादी के तुरंत बाद 1947–48 में पाकिस्तान के साथ हुए पहले युद्ध के बहादुर सिपाहियों के लिये भारत के पास कोई पदक नहीं था। बहादुरी का सर्वोच्च पदक उस समय विक्टोरिया क्रॉस था जो कि अंग्रेजों द्वारा प्रदान किया जाता था। आजादी के बाद इस पदक को भारतीय सेना के जवानों को नहीं दिया जा सकता था। तब जून 1948 में वीरता के लिये सर्वोच्च तीन पदक–परमवीर चक्र (ब्रिटिश विक्टोरिया क्रॉस के समतुल्य), महावीर चक्र (इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट के समतुल्य) और वीर चक्र (मिलिट्री क्रॉस के समतुल्य) को क्रमशः चुना गया। इस अलंकरण का पहला बैच 26 जनवरी 1950 को प्रस्तुत किया गया था।

परमवीर चक्र पदक का डिजाइन सावित्री खानोलकर नामक एक महिला ने किया था। वह जन्म से रूसी थीं, लेकिन एक भारतीय सेना के अधिकारी विक्रम खानोलकर से शादी कर ली थी। इनका मूल नाम इवावोन लिंडा मेडे डे था, जो शादी के बाद सावित्री बाई के नाम से जानीं गयी। सावित्री बाई की भारतीय साहित्य, पौराणिक कथाओं, संस्कृत में गहरी रूचि थी। यह पदक गोलाकार $1\frac{3}{8}$ इंच व्यास का होता है। जिसके बीच में भारतीय प्रतीक चिह्न और किनारे पर चार इन्द्र वज्र बना होता है। इसके पीछे की पृष्ठ पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में परमवीर चक्र लिखा होता है तथा दो कमल के पुष्प बने होते हैं। इसे प्लेन बैंगनी रंग के रिबन में पहना जाता है।

महावीर चक्र (MVC)– महावीर चक्र युद्ध के समय दुश्मन के समक्ष जल, थल अथवा नभ में शानदार प्रदर्शन करने वाले सैनिक को दिया जाता है। यह युद्ध के समय वीरता का दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार है। यह गोलाकार आकृति और $1\frac{3}{8}$ इंच व्यास का चाँदी से बना होता हैं जिस पर एक स्टार बना होता है। स्टार के बीच में भारत का प्रतीक चिह्न बना होता है। इसके रिबन का आधा भाग सफेद और आधा भाग नारंगी होता है।

अशोक चक्र– अशोक चक्र भी परमवीर चक्र के समकक्ष है, लेकिन यह शांति काल में वीरता के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पदक है। इसे आतंकवाद, उपद्रव या प्रत्यक्ष युद्ध को छोड़ अन्य परिस्थितियों में सर्वोच्च वीरता के लिए प्रदान किया जाता है। यह सेना और अर्द्धसैन्य बलों को ही नहीं बल्कि सामान्य नागरिकों को भी प्रदान किया जा सकता है। यह हरे रिबन की पट्टी जिसे बीच में एक पतली नारंगी दो बराबर भागों में बाँटती है, में गुँथा होता है।

कीर्ति चक्र– शांति काल में आतंकवाद, उपद्रव या प्रत्यक्ष युद्ध को छोड़ अन्य परिस्थितियों में वीरता के लिए प्रदान किया जाने वाला यह दूसरा सर्वोच्च पदक है। यह सेना और अर्द्धसैन्य बलों के अतिरिक्त सामान्य नागरिकों को भी प्रदान किया जा सकता है।

वीर चक्र– युद्ध के समय बहादुरी के प्रदर्शन के लिए वीर को यह पदक प्रदान किया जाता है।

शौर्य चक्र– शांति काल में वीरता का श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिये बहादुर व्यक्तियों को शौर्य चक्र से सम्मानित किया जाता है।

सेना मेडल– किसी सैनिक के कार्य के प्रति गहरी निष्ठा या सैन्य हित में किये गये कार्यों के लिए सेना मेडल प्रदान किया जाता है। यह मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है।

नौ सेना मेडल– नौ सेना में अदम्य साहस और अपने कार्य के प्रति गहरी निष्ठा के लिये इस पदक को प्रदान किया जाता है। यह पदक मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है।

वायु सेना मेडल– वायु सेना में बहादुरी अथवा अपने कार्य के प्रति निष्ठा और समर्पण के लिये वायु सेना मेडल प्रदान किये जाते हैं।

मेंशन इन डिस्पेच– यह एक तरह का प्रशंसा पत्र है, जो उन सैनिको या अधिकारियों को दिया जाता है, जिनकी सेवा उल्लेखनीय है या जिन्होंने कोई बहादुरी का कार्य किया हो। लेकिन यह कार्य किसी पदक के प्राप्त करने के मानदंड से कम हो। ऐसे लोगों के लिये सेनाध्यक्ष एक सूची तैयार कर रक्षा मंत्री को भेजते हैं। इसमें जिन व्यक्तियों को नाम होता है, उन्हें वि"ोष प्रमाण पत्र दिया जाता है।

सेनाध्यक्ष का प्रशंसा कार्ड– यह कार्ड किसी ऑपरेशन के दरम्यान या सामान्य रूप से किसी उल्लेखनीय कार्य करने वाले सैनिकों या नागरिकों (जो कि सेना के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं) को दिया जाता है। इसे मरणोपरांत नहीं दिया जाता है।

जीवन रक्षा पदक– यह पदक बाढ़, आग, रेस्क्यू ऑपरेशन, खदान आदि में फँसे लोगों के जीवन की रक्षा करने के लिए प्रदान किया जाता है। यह पदक मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है।

विशिष्ट सेवा पदक– किसी भी सैनिक को उसके विशिष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है।

युद्ध सेवा पदक– किसी भी सैनिक को युद्ध या विद्रोह के दौरान विशिष्ट कार्य के लिये प्रदान किया जाता है।

सेना के हथियार

❖ थल सेना के हथियार–

टैंक– भारतीय सेना के प्रमुख टैंकों में टी–90, टी– 72 और टी–55 हैं। अर्जुन भारत का स्वदेशी टैंक है।

बख्तरबंद वाहन– युद्ध भूमि तक सैनिकों को सुरक्षित पहुँचाने–ले जाने के लिये बीएमपी–1, बीएमपी–2 (सारथ), एफवी 432, सीएमटी, ओटी–64 जैसे वाहन हैं।

बारूदी सुरंग वाहन– बारूदी सुरंगों का पता लगाने तथा हटाने के लिए कैस्पिर, हाईड्रेमा, आदित्य जैसे सुरक्षित वाहन हैं।

तोपें– भारत के पास बोफोर्स हॉवित्जर तोपों के अलावा एम–46, डी–46 फील्ड गन, स्वदेशी 105 एमएम तोपें और पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट लांचर और एल–70जैसी विमानभेदी तोपें हैं।

मिसाइल सिस्टम– भारत के पास टैंक भेदी मिसाइल नाग, लाहट, जैवलिन आदि हैं। दुश्मनों को तबाह करने के लिए आकाश, ब्रह्मोस, अग्नि–5, अग्नि–4, पृथ्वी जैसी मिसाइल हैं। ये मिसाइलें 150 किमी. से लेकर 5000 किमी तक मार कर सकती हैं।

हेलोकॉप्टर– भारतीय सेना के पास अत्याधुनिक अपाचे, चिनूक, चेतक, चीता, एमआई–35, एमआई–26, ध्रुव जैसे हेलीकॉप्टर मौजूद हैं। एमआई–26 विश्व का सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर है, जिसमें एक साथ 100 लोग बैठ सकते हैं।

❖ वायुसेना के हथियार–

लड़ाकू विमान– भारतीय वायुसेना के पास दुश्मनों के छक्के छुड़ाने के लिए राफेल, मिराज 2000 (वज्र), सुखोई एसयू–30 एमके आई, मिग–21, मिग–27, मिग–29, बायसन, जगुआर जैसे लड़ाकू विमान है।

टोही विमान– भारतीय वायुसेना के पास दुश्मन पर आसमान से नज़र रखने के लिए इस्राइल में निर्मित मानव रहित टोही विमान 'सर्चर' व 'हेरोन' हैं। इसके अलावे कई अवॉक्स विमान हैं, जो चार सौ किलोमीटर दूर से ही दुश्मन की हरकत पर नज़र रख सकते हैं। ये उड़ते हुए वायुसेना, थल सेना और नौसेना के साथ संपर्क बनाए रख सकते हैं।

डीप पेनिट्रेशन फाइटर– जगुआर विमान रडार की पकड़ से बचने के लिए पेड़ की ऊँचाई तक उड़कर वार कर सकता है।

परिवहन विमान– सैनिकों तथा घायलों को सुरक्षित स्थान तक ले जाने के लिए एएन–32, आईएल–76, डोर्नियर, एवरो, 130–जे हर्क्युलिस जैसे विमान हैं।

हवाई मिसाइल– भारतीय वायुसेना के पास हवा से हवा, हवा से सतह में मार करने वाली, जंगी जहाज नाशक और पनडुब्बी नाशक मिसाइलें और रॉकेट हैं।

❖ नौसेना के हथियार–

जंगी पोत– भारतीय नौ सेना के बेड़े में आईएनएस विक्रमादित्य, आईएनएस विक्रांत, आईएनएस निर्भीक, आईएनएस गोदावरी जैसे मिसाइल और विमान ले जाने में सक्षम युद्धपोत हैं।

विध्वंसक जहाज– नौ सेना के पास दिल्ली, मैसूर, मुम्बई, राजपूत, राणा, रणजीत और रणविजय नाम के जंगी पोत है।

फ्रिगेट– रडार की पहुँच से दूर और मिसाइलों से लैस इन पोतों में शिवालिक, तलवार, त्रिशूल और तबर प्रमुख है।

कॉवेट– नौ सेना में कुठार, कृपाण, कोरा, खंजर, वीर, निशंक, विनाश, विपुल आदि प्रमुख कॉर्वेट जहाज है।

एंफिबियस– दुश्मन की धरती पर हथियार पहुँचाने के लिए जलाश्व के अलावा शार्दूल, केसरी, ऐरावत, घड़ियाल जैसे कई एंफिबियस पोत हैं।

टैंकर– समुद्र में जहाजों को ईंधन पहुँचाने के लिए टैंकर जहाजों की जरूरत पड़ती है, जो पानी में चलते हुए पाइपों के जरिए युद्धक जहाजों में तेल भरते हैं।

साभार– नंदन जनवरी 2011

भारतीय सेना के बैच

भारतीय सेना का यूनिफॉर्म एक जैसा होता है, तो फिर उनके ओहदों का पता कैसे चलता है? है न सोचने वाली बात। जी, भारतीय सेना के सभी ओहदों के अधिकारियों के लिए एक निश्चित बैच लगाये जाते हैं, जिसे देखकर आप भी उनके रैंक के बारे में जान सकते हैं। आइये, इन्हें पहचानने का प्रयास करें।

थल सेना–

नौ सेना–

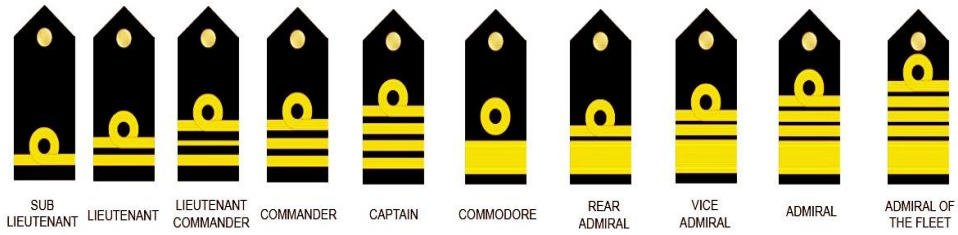

वायु सेना–

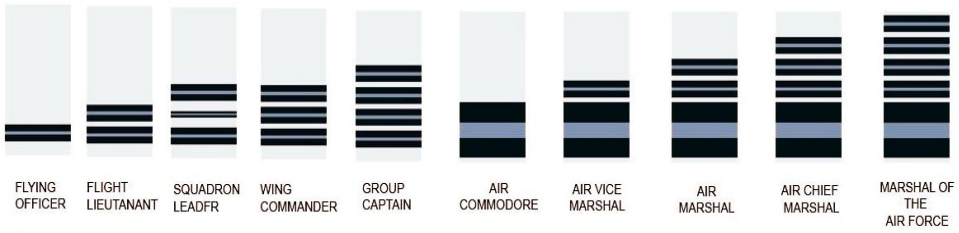

कोट के बाजुओं पर बटन क्यों होते हैं?

पहले जहाजों पर काम करने के लिए बच्चों को भी लगाया जाता था। समुद्र में होने वाली हलचलों से उनकी तबीयत खराब हो जाती थी या घर की याद आने पर वे रोने लगते थे। उनके कपड़ों में रूमाल रखने के लिये जेबें नहीं होती थीं। लिहाजा वे अपने कोट के बाजू से नाक–मुँह पोंछ लेते थे, जो अच्छा नहीं लगता था। ब्रिटिश नाविक लॉर्ड नेल्सन ने कोट के बाजू पर बटन लगवा दिया। बटन लग जाने के कारण नाक पोंछना संभव नहीं था। बाद में फैशन के तौर पर इसे अपना लिया गया।

कविता

मन समर्पित, तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ !

माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अंकिचन
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण

गान अर्पित, प्राण अर्पित
रक्त का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ !

कर रहा आराधना मैं आज तेरी
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी
शीश पर आशीष की छाया घनेरी

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित
आयु का क्षण–क्षण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ !

तोड़ता हूँ मोह का बंधन क्षमा दो
गाँव मेरे, द्वार, घर, आँगन क्षमा दो
देश का जयगान अधरों पर सजा है
देश का ध्वज हाथ में केवल थमा दो

ये सुमन लो, यह चमन लो
नीड़ का तृण–तृण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ !

–रामावतार त्यागी

तोपों की सलामी

पुराने जमाने में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या विजेता जहाज के सम्मान में पराजित पोत तोपों की सलामी देता था। तोपों की सलामी का अर्थ था कि पराजित तोप ने अपने बारूद को नष्ट कर दिया है। तोपों की सलामी हमेशा सम के बजाय विषम संख्या में दी जाती थी, क्योंकि सम संख्या को अशुभ माना जाता है। आजादी के कुछ वर्षों के बाद तक राष्ट्रपति को 31 तोपों की सलामी दी जाती थी, जिसे बाद में 21 कर दिया गया। राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस के अवसर पर 21 तोपों की सलामी दी जाती है।

सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार के समय गोलियां दागने की पाश्चात्य परंपरा का कारण मृत के शरीर से निकली बुरी आत्माओं को दूर भगाना रहा है।

सु'शील शर्मा, नंदन, जनवरी 2011

इन्हें जानें–

थल सेना दिवस– 15 जनवरी
नौ सेना दिवस– 4 दिसम्बर
वायु सेना दिवस– 8 अक्टूबर
थल सेना का आदर्श वाक्य– 'सर्विस बिफोर सेल्फ'
नौ सेना का आदर्श वाक्य– 'श नो वरूणः'
वायु सेना का आदर्श वाक्य– 'नभः स्पृशं दीप्तम'

कोर्ट मार्शल क्या होता है?

कोर्ट मार्शल एक सैन्य न्यायालय है। जहाँ सशस्त्र सेनाओं से संबंधित व्यक्तियों द्वारा किये गए अपराधों के परीक्षण के लिए गठित किया जाता है। इसका काम सेना में अनुशासन तोड़ने या अन्य अपराध करने वाले अधिकारी पर मुकदमा चलाना, सुनवाई करना और सजा सुनाना होता है। इस कानून में 70 तरह के अपराधों के लिए कानून है। इसके अतिरिक्त ये न्यायालय युद्धबन्दियों द्वारा किये गए युद्ध अपराधों का परीक्षण भी कर सकते है।

संकलन एवं संपादन–
शशिधर उज्ज्वल, शिक्षक
रा0 मध्य विद्यालय, सहसपुर
प्रखण्ड– बारूण, जिला– औरंगाबाद, राज्य– बिहार,
पिन– 824112
मोबाइल न0 – 7004859938
ई मेल– ujjawal.shashidhar007@gmail.com

टीचर्स ऑफ बिहार
वेबसाइट– www.teachersofbihar.org
ई–मेल– teachersofbihar@gmail.com
मोबाइल न0 – 7250818080
अब ज्ञान दृष्टि पढ़ें:
https://www.teachersofbihar.org/gyan-drishti.html